अथ विसर्ग सन्धि प्रकरणम्

(Visarga Joining)

⊛- सत्व विधायक सूत्रम

सूत्र :- विसर्जनीयस्य सः ॥

अर्थ :- विसर्ग के स्थान में सकार होता है खर् परे रहते। यथा :- विष्णुस्त्राता

विष्णुस्त्राता - (विष्णु रक्षक है)

विष्णुः + त्राता इस स्थिति में विसर्ग से परवर्ती खर् प्रत्याहार का वर्ण तकार है, इसलिए "विसर्जनीयस्य सः" इस सूत्र से विसर्ग के स्थान में सकार होकर "विष्णुस्त्राता" रूप बनता है। इसी प्रकार से अन्य उदाहरण :- धात्रः + तिष्ठति = धात्रस्तिष्ठति - (धात्र खड़ा है), गोः + चरति = गौस् चरति = गौश्चरति (गाय चरती है) यहाँ सकार को चवर्ग का योग होने से श्चुत्व से शकार हो गया। हरिः + चरति = हरिश्चरति।

Scanned with CamScanner

⊛- सत्व बाधक सूत्रम्

सूत्र- वा शरि ॥

वृत्तिः- शरि विसर्गस्य विसर्गो वा। हरिः शेते, हरिश्शेते।

अर्थः- शर् प्रत्याहार (श्, ष्, स्) परे रहते विसर्ग को विसर्ग ही होता है विकल्प से।

यथा- हरिः शेते, हरिश्शेते।

⇒ हरिः शेते, हरिश्शेते (हरि सोता है)

हरिः+शेते इस स्थिति में "विसर्जनीयस्य सः" इस सूत्र से विसर्ग को सकार प्राप्त हुआ, उसे बाधकर "वा शरि" सूत्र से विकल्प से विसर्ग का विसर्ग ही रहा तो 'हरिः शेते' रूप बना, किन्तु अभाव पक्ष में विसर्ग को सकार एवं "स्तोः श्चुना श्चुः" सूत्र से स् को श् (श्चुत्व) होकर हरिश्शेते रूप बना।

⊛ रुत्व विधायक सूत्रम्

सूत्र :- स सजुषो रुः ॥

वृत्तिः- पदान्तस्य सस्य सजुषश्च रुः स्यात्।

अर्थः- पदान्त के सकार और सजुष् शब्द के सकार के स्थान में रु होता है।

Scanned with CamScanner

उत्व विधायक सूत्रम्

सूत्रः- अतो रो रप्लुतादप्लुते ॥

वृत्तिः- अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यादप्लुतेऽति।
यथा- शिवोऽर्च्यः ।

अर्थः- अप्लुत अकार से पर 'र' के स्थान में उकार हो अप्लुत अकार परे होने पर। यथा- शिवोऽर्च्यः।

⇒ **शिवोऽर्च्यः** (शिव पूज्य है)

शिवस्+अर्च्यः इस अवस्था में शिवस् का 'स्' पदान्त है, इसलिए "स सजुषो रुः" इस सूत्र से 'स्' को 'र' हुआ अर्थात्- शिवर+अर्च्यः
अब "अतो रो रप्लुतादप्लुते" इस सूत्र से 'र' को उकार होकर 'शिव उ+अर्च्यः' इस स्थिति में "आद गुणः" इस सूत्र से "उ+अ" को मिलकर ओ गुण हुआ तो रूप— शिवो+अर्च्यः। इस स्थिति में "एङः पदान्तादति" इस सूत्र से पूर्वरूप (ओ+अ = ओऽ) होकर शिवोऽर्च्यः रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

उत्व विधायक सूत्रम्

सूत्र :- हशि च ॥

अर्थ :- हश् प्रत्याहार (वर्णों के तृतीय, चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ण तथा य् व् र् ल् ह्) परे होने पर भी अप्लुत अकार से आगे वाले 'रु' को उकार हो जाता है। यथा- शिवो वन्द्यः ।

शिवो वन्द्यः -(शिव वन्दनीय है)

शिवस् + वन्द्यः इस स्थिति में "स सजुषो रुः" इस सूत्र से पदान्त स् के स्थान में रु होकर "शिव+रु+वन्द्यः" बना फिर "हशि च" इस सूत्र से हश् वकार परे होने पर 'रु' को उकार हुआ। "शिव+उ+वन्द्यः" इस स्थिति में "आद गुणः" इस सूत्र से अ+उ को ओ गुण हुआ तो शिवो वन्द्यः रूप सिद्ध हुआ ।

Scanned with CamScanner

यत्व विधायक सूत्रम्

सूत्र :- भो भगो अघो अपूर्वस्य यो ऽशि ।

वृत्ति :- एतत् पूर्वस्य रोर्यादेशोऽशि । देवा इह, देवायिह ।
भोस् भगोस् अघोस् इति सान्ता निपाताः ।
तेषां रोर्यत्वे कृते ।

अर्थ :- भो - भगो - अघो तथा अकार है पूर्व में जिसके ऐसे 'रु' को 'य' होता है अश् (सभी स्वर एवं हश् प्रत्याहार (ह, य, व, र, ल, ञ, म ङ, ण, न, झ भ घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द) परे रहते ।

देवा इह, देवायिह (देवता यहाँ)

देवास् + इह इस स्थिति में "स सजुषो रुः" इस सूत्र से 'स्' को 'रु' हुआ तो "देवा + रु + इह" फिर "भो भगो अघो - अपूर्वस्य यो ऽशि" इस सूत्र से 'रु' को 'य्' आदेश हुआ । "लोपः शाकल्यस्य" इस सूत्र से विकल्प से 'य्' का लोप होकर देवा इह रूप बनता है किन्तु अभाव पक्ष में जहाँ 'य्' का लोप नहीं होगा वहाँ 'देवायिह' रूप बनेगा ।

Scanned with CamScanner

यलोप विधायक सूत्रम्

सूत्र:- हलि सर्वेषाम् ॥

वृत्ति:- भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि। यस्य लोपः स्याद्धलि। भो देवाः। भगो नमस्ते। अघो याहि।

अर्थ:- भोस् भगोस् और अघोस् पूर्वक तथा अवर्णपूर्वक यकार का लोप हो हल् परे होने पर सभी के मत में। जैसे- भो देवाः, भगो नमस्ते, अघो याहि आदि।

भो देवाः-(हे देवताओ)

भोस्+देवाः इस स्थिति में "स सजुषो रुः" इस सूत्र से 'स्' के स्थान पर 'रु' आदेश होने पर "भो भगो अघो-अपूर्वस्य योऽशि" इस सूत्र से 'रु' के स्थान पर 'य' आदेश हुआ तो भो+य्+देवाः तब "हलि सर्वेषाम्" इस सूत्र से 'य्' का लोप होकर भो देवाः रूप सिद्ध हुआ।

भगो नमस्ते-(भगवान्, आपको नमस्कार)

भगोस्+नमस्ते इस स्थिति में "स सजुषो रुः" इस सूत्र से 'स्' को 'रु' हुआ तो "भो भगो अघो-अपूर्वस्य योऽशि" इस सूत्र से 'रु' को 'य्' आदेश

Scanned with CamScanner

हुआ तो 'भगो+य्+नमस्ते' इस स्थिति में "हलि सर्वेषाम्" इस सूत्र से 'य्' का लोप होकर 'भगो नमस्ते' रूप सिद्ध हुआ।

अधो याहि - (अरे दुष्ट, चला जा)

अधोस् + याहि इस अवस्था में "स सजुषो रुः" इस सूत्र से 'स्' के स्थान पर 'रु' आदेश हुआ फिर "भो-भगो-अघो अ-पूर्वस्य योऽशि" इस सूत्र से 'रु' के स्थान पर 'य्' आदेश हुआ तो 'अघोय्+याहि' इस स्थिति पर "हलि सर्वेषाम्" इस सूत्र से 'य्' का लोप होकर 'अघो याहि' रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

रुत्व विधायक सूत्रम्

सूत्रः- रोऽसुपि ॥

वृत्तिः- अह्नो रेफादेशो न तु सुपि। अहरहः। अहर्गणः।

अर्थः- अहन् शब्द के स्थान में रेफ (र्) आदेश होता है, परन्तु सुप् परे होने पर उपरोक्त आदेश नहीं होता। यथा- अहरहः, अहर्गणः।

अहरहः-(प्रतिदिन)

अहन्+अहः इस स्थिति में "रोऽसुपि" इस सूत्र से 'न्' के स्थान पर 'र्' आदेश हुआ तो अहर्+अहः इनका संयोग होने पर अहरहः रूप सिद्ध हुआ।

अहर्गणः-(दिनों का समूह)

अहन्+गणः इस स्थिति में "रोऽसुपि" इस सूत्र से न् के स्थान पर 'र्' आदेश हुआ तो अह+र्+गणः इन का जल तुम्बीका न्यायेन रेफस्य ऊर्ध्व गमनम् होने से अहर्गणः रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

रेफ लोप विधायक सूत्रम्

सूत्रः- रो रि ॥

वृत्तिः- रेफस्य रेफे परे लोपः ॥

अर्थः- रेफ (र्) परे रहते रेफ का लोप होता है।

दीर्घ विधायक सूत्रम्

सूत्रः ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥

वृत्तिः- ढरेफयोर्लोपनिमित्तयोः पूर्वस्याणो दीर्घः ॥
पुना रमते। हरी रम्यः। शम्भू राजते। अणः किम्- वृढः, वृढः।

अर्थः- ढकार के लोप के निमित्त ढकार और रेफ के लोप के निमित्त रेफ परे रहते उनसे पूर्व अण् के स्थान में दीर्घ आदेश हो। यथा- पुरारमते, हरीरम्यः, शम्भू राजते।

पुना रमते- (पुनः रमण करता है)

पुनर् + रमते इस स्थिति में "रो रि" इस सूत्र से पुनर् के र् का लोप हो गया तो पुन + रमते "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः" सूत्र से 'पुन' के 'न' के 'अ' को दीर्घ

Scanned with CamScanner

हुआ क्योंकि 'र्' लोप का निमित्त रेफ परे है अत: पुना रमते रूप सिद्ध हुआ।

हरी रम्य: - (हरि रमणीय है)

हरिर् + रम्य: इस स्थिति में "रोरि" इस सूत्र से हरिर् के 'र्' का लोप तो हरि + रम्य: इस अवस्था में "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽण:" इस सूत्र से 'इ' (अण्) को दीर्घ हुआ अत: हरी रम्य: रूप सिद्ध हुआ।

शम्भू राजते - (शिव भगवान् सुशोभित हो रहे हैं।)

शम्भुर् + राजते इस स्थिति में "रोरि" इस सूत्र से शम्भुर् के 'र्' का लोप अत: 'शम्भु + राजते' इस अवस्था में "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽण:" इस सूत्र से 'उ' को दीर्घ हुआ तो शम्भू राजते रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

विप्रतिषेध विधायक सूत्रम्

सूत्र:- विप्रतिषेधे परं कार्यम् ॥

वृत्ति:- तुल्यबल विरोधे परं कार्यं स्यात्। इति लोपे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति 'रो रि' इत्यस्यासिद्धत्वादुत्वमेव। यथा:- मनोरथ: ।

अर्थ:- तुल्य बलवाले सूत्रों का विरोध होने पर अग्रिम सूत्र से होने वाला परवर्ती कार्य ही होता है। यथा- मनोरथ: ।

मनोरथ: -(इच्छा)

मनस् + रथ:. इस स्थिति में "स सजुषो रु:" इस सूत्र से सकार को 'रु' हुआ तो मनरु + रथ: बना। फिर "उपदेशेऽजनुनासिक इत्" सूत्र से 'रु' के 'उ' की इत् संज्ञा और "तस्य लोप:" सूत्र से 'रु' के 'उ' का लोप मनर् + रथ: इस अवस्था में "हशि च" सूत्र से 'र्' को 'उत्व' प्राप्त हुआ तो "रो रि" सूत्र से 'र्' का लोप प्राप्त होने पर दोनों के तुल्यबल विरोध में "विप्रतिषेधे परं कार्यम्" सूत्र के अनुसार 'उत्व' को बाधकर लोप प्राप्त होता है किन्तु "पूर्वत्राऽसिद्धम्" से लोप के असिद्ध हो जाने से "हशि च" सूत्र से 'र्' को उकार फिर मन + उ + रथ: इस अवस्था में "आद्गुण:" सूत्र से गुण हो कर मनोरथ: रूप बना

सुलोप विधायक सूत्रम्

सूत्र:- एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि ॥

वृत्ति:- अककारयोरेतत्तदोर्यः सुस्तस्य लोपो हलि, न तु नञ् समासे। एष विष्णुः। स शम्भुः। अकोः किम्- एषको रुद्रः। अनञ् समासे किम्- असः शिवः। हलि किम्- एषोऽत्र।

अर्थः- ककार रहित एतद् और तद् शब्द का जो सु (प्रथमा विभक्ति के एक वचन का प्रत्यय) उसका लोप हो, हल् परे होने पर किन्तु 'नञ्' समास में न हो। यथा- एष विष्णुः स शम्भुः।

एष विष्णुः -(यह विष्णु है)

एषसु + विष्णुः इस स्थिति में "एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि" इस सूत्र से 'सु' का लोप हुआ अतः एष विष्णुः रूप सिद्ध हुआ।

स शम्भुः -(वह शिव है)

ससु + शम्भु इस अवस्था में "एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि" इस सूत्र से 'सु' को लोप हुआ अतः स शम्भुः रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

अको: किम् - ककार रहित को क्यों कहा ? इसलिए कि 'एषको रुद्र:' में सु लोप नहीं होता क्योंकि यहाँ पर 'एतत्' शब्द ककार सहित है। यथा- एषको रुद्र:।

एषको रुद्र:-(यह भगवान् रुद्र है)

एषकस् + रुद्र: इस स्थिति में 'एषक' ककार सहित 'एतत्' शब्द का रूप है। अत: "एतत्तदो: सुलोपोऽकोर-नञ् समासे हलि" इस सूत्र से 'स्' का लोप नहीं हुआ अपितु "स सजुषो रु:" इस सूत्र से 'स्' को 'रु' हुआ, "हशि च" इस सूत्र से 'रु' के स्थान पर उकार होकर एषक उ + रुद्र: अत: "आद गुण:" सूत्र से अ+उ को ओ गुण हुआ तो एषको रुद्र: रूप सिद्ध हुआ।

अनञ् समासे किम् ? अर्थात् नञ् समास क्यों नहीं, अत: ऐसा क्यों कहा गया ? इस का उत्तर यह है कि यहाँ "एतत्तदो:" सूत्र 'नञ्' समास में नहीं लगता। इसलिए असस् + शिव: = अस: शिव: । यहाँ 'स्' का लोप नहीं हुआ। "न स:" इस विग्रह में

Scanned with CamScanner

नञ् समास होकर असस् असः रूप बनता है।

असः शिवः - (उस से भिन्न शिव)

असस् + शिवः इस स्थिति में "ससजुषो रुः" इस सूत्र से सकार को 'रु' अनुबन्ध लोप फिर "खरवसानयो-र्विसर्जनीयः" सूत्र से विसर्ग होकर असः शिवः रूप बना।

हलि किम्? अर्थात् - हल् परे होने पर सु का लोप हो यह क्यों कहा? इसलिए कि एषः अत्र = एषोऽत्र - (यह यहाँ है) - यहाँ पर लोप नहीं होता, क्योंकि यहाँ पर 'अ' (अच्) परे है 'हल्' परे नहीं है।

एषोऽत्र - (यह यहाँ है)

एषस् + अत्र इस स्थिति में "ससजुषो रुः" इस सूत्र से 'स्' को 'रु' हुआ "अतो रोरप्लुतादप्लुते" इस सूत्र से 'रु' को 'उ' हुआ और "आद्गुणः" इस सूत्र से अ+उ को गुण होकर एषो + अत्र इस स्थिति में "एङः पदान्तादति" इस सूत्र से 'अ' का पूर्व रूप अर्थात् अवग्रह अकार होकर 'एषोऽत्र' रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

सुलोप विधायक सूत्रम्

सूत्र:- सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम् ॥

वृत्ति:- स इत्यस्य सोर्लोपः स्यादचि पादश्चेल्लोपे सत्येव पूर्यते। सेमामविड्ढिप्रभृतिम्। सैष दाशरथी रामः ॥

अर्थ:- सः शब्द से सु (प्रथमा विभक्ति के एकवचन) का लोप हो जाता है, अच् परे होने पर, यदि पाद की पूर्ति लोप होने पर ही होती हो। यथा- सेमामविड्ढिप्रभृतिम्। सैष दाशरथी रामः।

सेमामविड्ढिप्रभृतिम् - (वह आप हमें यह प्रभृति धारण-करावें, जो आप हम को दे सकते हैं)

सस् + इमामविड्ढिप्रभृतिम्, इस दशा में "सोऽचि लोपे-चेत् पादपूरणम्" सूत्र से 'सु' (स्) के लोप होने पर "आद्गुणः" सूत्र से गुण होकर सेमामविड्ढिप्रभृतिम् रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

सैष दाशरथी रामः - (यह वही दशरथ का पुत्र राम है)

सस् + एष दाशरथी रामः , इस स्थिति में "सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम्" इस सूत्र से सस् के 'स्' का लोप होकर "वृद्धिरेचि" इस सूत्र से अ+ए = ऐ वृद्धि हो जाती है अतः "सैष दाशरथी रामः" रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner